पंडित दीनदयाल जी का आर्थिक दर्शन

डॉ. आर.के. गुप्ता
प्राचार्य, दुर्गा नारायण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, फतेहगढ़, फर्रुखाबाद

एकात्म मानववाद के प्रणेता निस्वार्थ व निष्ठा भाव से राष्ट्र सेवक अप्रतिम राष्ट्रभक्त पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी आधुनिक युग के महान कर्मयोगी एवं भौतिक चिंतक थे।

साम्राज्यवादी अंग्रेजों ने अपनी औद्योगिक क्रांति को सफल व साकार करने के लिए भारत के उत्पादन तंत्र को तोड़ मरोड़ दिया। उन्होंने अपने शासन एवं प्रशासन के संचालन के लिए भारत की भावी पीढ़ी को सृजनात्मक एवं उत्पादक अर्थ रचना से विरत कर नौकरी लोभी बनाया। भारतीय बाजार में प्राकृतिक संसाधनों का भयानक अवशोषण हुआ। 'सोने की चिड़िया' कहलाने वाला भारत कंगाल एवं दरिद्र बन गया। अर्थव्यवस्था के क्षेत्र नए नियामक सोवियत रूस की मार्गदर्शिकाओं का अनुगमन करते हुए पाश्चात्यों के दूसरे 'ध्रुव' अर्थात समाजवादी रुझान वाले बन गए। पंचवर्षीय योजनाओं का खाका तैयार कर उनका क्रियान्वन हुआ। सहकारी खेती एवं उद्योगों के सरकारी करण का यह दौर अत्यधिक चुनौतीपूर्ण था।(1)

पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने इस चुनौती को स्वीकार किया। शासन व समाज को चेताया। उनकी दो पुस्तकें आई पहली अंग्रेजी में Two Plans: Promises and performance, Prospectus (दो योजनाएं वायदे अनुपालन आसार) तथा दूसरी हिंदी में "भारतीय अर्थ नीति विकास की एक दिशा"। इन पुस्तकों में उन्होंने भारतीय अर्थायाम का विश्लेषण किया, 'आर्थिक लोकतंत्र' की अवधारणा प्रस्तुत की। उन्होंने स्पष्ट किया कि जैसे राजनीतिक लोकतंत्र का निष्कर्ष है, प्रत्येक वयस्क को मताधिकार, उसी तरह प्रत्येक व्यक्ति को कार्यावसर व रोजगार।

यह आर्थिक लोकतंत्र का निष्कर्ष है। उन्होंने परंपरागत स्वरोजगार कार्य क्षेत्र को सफल बनाने तथा निजी एवं सरकारी क्षेत्र के कृत्रिम विभाजन को न करने की सलाह दी। औद्योगिक क्रांति एवं उपनिवेशवाद के गर्भ से जन्मी केंद्रीकरण वादी अर्थव्यवस्था का विरोध करते हुए विकेंद्रित अर्थव्यवस्था को अपना आदर्श बनाया।(2)

अंत्योदय का प्रतिपादन करते हुए उन्होंने सचेत किया कि हमारी समस्या केवल अर्थ का अभाव (गरीबी) ही नहीं है। उन्होंने उत्पादन में वृद्धि वितरण में समता तथा उपभोग में संयम का त्रि–सूत्रीय समीकरण प्रस्तुत किया। वे पाश्चात्य परंपरा के ढांचे से बंधकर सोचने के बजाय भारतीय परंपरा एवं परिस्थिति को समझ कर व्यवहारिक आयोजन के पक्ष में थे। उनकी स्पष्ट मान्यता की थी कि भारतीय अर्थव्यवस्था की समस्याओं के लिए दो शब्दों का निदान पर्याप्त है। पहला स्वदेशी तथा दूसरा है विकेंद्रीकरण। स्वदेशी को उनके अवधारणा केवल आर्थिक तक ही सीमित नहीं थी व्यापक रूप से संपूर्ण व्यवस्था एवं वातावरण का भारतीयकरण करना चाहते थे।(3)

एक राष्ट्र की चिति की अवधारणा दीनदयाल जी का बहुमूल्य योगदान है। चिति राष्ट्र की आत्मा है। प्रत्येक राष्ट्र आर्थिक नीतियों के सही निर्माण के फैसले करने के लिए राष्ट्र की समुचित समझ होनी चाहिए। इस प्रकार एकात्म मानववाद के आर्थिक परिपेक्ष से पूंजीवाद और साम्यवाद पृथक हैं। स्वयं दीनदयाल जी के अनुसार पूंजीवाद और साम्यवाद यह दोनों प्रणालियां मानव के स्वरूप को और उसके संपूर्ण व्यक्तित्व को और आकांक्षाओं को जानने में विफल रही हैं। पूँजीवाद स्वार्थी और धन लोलुपता की एक ऐसी व्यवस्था है जो केवल जंगल का भयंकर प्रतिस्पर्धा का कानून जानती है जबकि साम्यवाद मनुष्य को एक कमजोर भोग की वस्तु मानता है।(4)

पूँजीवाद मे पूँजी और संपत्ति का अनाधित अधिकार व्यक्ति का है और समाजवाद मे सरकार का। पंडित दीनदयाल जी की स्पष्ट मान्यता है की अधिक उत्पादन, समुचित वितरण के साथ साथ उपभोग मे संयम ही आवश्यक है। उसका आधार संस्कार शिक्षा और संस्कृति ही होगी और उसका आधार धर्म होगा तभी मनुष्य केवल अर्थपरायण न होकर पूर्ण रूप से सुखी हो सकेगा। इसलिए एकात्म मानववाद के अनुसार स्वदेशी और विकेन्द्रीकरण ही अर्थनीति की आधारशिला होगी और लोकमत परिष्कार तथा विकेन्द्रीकरण ही राष्ट्र सत्ता के स्वरुप को निर्धारित करेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. दीनयाल उपाध्याय संपूर्ण वाङ्मय– (भाग एक), संपादक– डॉ. महेश चंद्र शर्मा, प्रकाशक–प्रभात प्रकाशन, प्रथम संस्करण 25 सितम्बर 2016, पुनर्मुद्रण– जनवरी 2017 पृष्ठ–– 121 से 207

2. ऋतम्भरा 2015–16 (सांस्कृति एवं शैक्षिक उन्नयन में प्रदेश का अग्रणी महाविद्यालय– विक्रमाजीत सिंह सनातन धर्म कालेज, कानपुर की वार्षिक पत्रिका) में प्रकाशित निबंध– ''दीनदयालजी और उनका चिन्तन" लेखक– डॉ. श्याम बाबू गुप्त, निदेशक– दीनदयाल शोध केन्द्र, छात्रपति शाहू जी महराज विश्वविद्यालय, कानपुर के सौजन्य से, पृष्ठ – 71 से 73

3. ऋतम्भरा 2015–16 (सांस्कृति एवं शैक्षिक उन्नयन में प्रदेश का अग्रणी महाविद्यालय– विक्रमाजीत सिंह सनातन धर्म कालेज, कानपुर की वार्षिक पत्रिका) में प्रकाशित निबंध– ''दीनदयालजी और उनका चिन्तन" लेखक– डॉ. श्याम बाबू गुप्त, निदेशक– दीनदयाल शोध केन्द्र, छत्रपति शाहू जी महराज विश्वविद्यालय, कानपुर के सौजन्य से, – पृष्ठ 72

4. ऋतम्भरा 2015–16 (सांस्कृति एवं शैक्षिक उन्नयन में प्रदेश का अग्रणी महाविद्यालय– विक्रमाजीत सिंह कालेज, कानपुर की वार्षिक पत्रिका) में प्रकाशित निबंध– 'सांस्कृतिक राष्ट्रवादः दीनदयाल उपाध्याय लेखक– डॉ. राकेश शुक्ल, एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, तेज, कानपुर के सौजन्य से, पृष्ठ – 74 से 76